*समापन कथन**

दीपाली पंत जोशी

- रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ सुब्बाराव ने हमें विश्लेषणात्मक फ्रेमवर्क प्रदान कर सम्मेलन के लिए एक प्रभावी शुरुआत प्रदान की।
- उन्होंने स्पष्ट किया कि वित्तीय संकट के पैदा होने से इस दिशा में हमारे प्रयासों में और प्रवाह आया।
- उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि कैसे मांग पक्ष से वित्तीय साक्षरता और आपूर्ति पक्ष से वित्तीय समावेशन की इक्वेशन तालमेल से काम करती है। उन्होंने भारतीय परिप्रेक्ष्य में विभिन्न चुनौतियों की ओर इशारा किया और बताया कि कैसे उदारीकृत 'अपने ग्राहक को जानिए' (केवायसी) मापदंडों के उदारीकरण और अनन्य पहचान संख्या (यूआईएन) से वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। तथापि बैंकों को इसे कारोबारी अवसर के रूप में लेना चाहिए न कि स्वयं पर थोपी गई एक बाध्यता के रूप में।
- डॉ.के.सी.चक्रवर्ती ने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि कैसे वित्तीय साक्षरता, वित्तीय शिक्षा और वित्तीय स्थायित्व एक दूसरे के साथ अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं और एक ही श्रृंखला के हिस्से हैं।
- विश्व बैंक के कन्ट्री डायरेक्टर श्री ओनो रुल ने वित्तीय शिक्षा के जरिए वित्तीय सामर्थ्य निर्मित करने से जुड़े मामलों के बारे में विश्व बैंक द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी और इस संबंध में रिज़र्व बैंक द्वारा किए गए कार्यों का भी उल्लेख किया।
- एम्बेसेडर बाउचर ने बताया कि कैसे अक्तूबर 2011 में जी-20 के वित्त मंत्रियों ने, ओईसीडी के कार्यदल द्वारा वित्तीय उपभोक्ता सुरक्षा पर तैयार किए गए नए सिद्धांतों के साथ सहमति प्रकट की जो कि वित्तीय समावेशन और वित्तीय शिक्षा नीतियों के साथ जुड़े हैं।
- वित्तीय संकट के दौरान जिन्हें इस विषय की जानकारी नहीं थी उन लोगों ने अपनी चादर से बाहर पैर पसार कर ऋण लिए अफ्रीका, नाइजीरिया, पापुआन्यूगिनी, जापान, भारत में नहीं, बल्कि अमरीका में, क्योंकि आकलनकर्ताओं ने उस संपत्ति के मूल्य को बढ़ा कर बताया, जिसे कि भावी खरीदार खरीदने को उत्सुक थे।
- उधारकर्ताओं को यकीन दिलाया गया कि उन्होंने केवल एक स्टैण्डर्ड फिक्स्ड रेट मॉर्टगेज ही लिया है जब कि बाद में उन्हें पता चला कि उनका मॉर्टगेज एक जटिल वेरियेबल रेट कॉन्ट्रैक्ट था जिसे कि वे अपनी वर्तमान कमाई से ऑनर नहीं कर सकते थे।
- ब्रोकरों, मॉर्टगेज कंपनियों आदि ने वित्तीय रूप से निरक्षर उधारकर्ताओं को ठगा और इस प्रकार जोखिम भरी ऋण वितरण प्रथाएं प्रोलिफरेट हुईं।
- कोई उपभोक्ता सुरक्षा नहीं थी। सबकी अपनी-अपनी ऋण वितरण नीतियां थीं।
- वित्तीय संकट का एक बड़ा हिस्सा वित्तीय निरक्षरता तथा वित्तीय सामर्थ्य के अभाव के परिणामस्वरूप था। हम यहां यह सुनिश्चित करने के लिए ही मिल रहे हैं कि ऐसा फिर नहीं होना चाहिए। यह पहला वायदा है जिसे हमें करना चाहिए और इस पर अटल रहना चाहिए।
- इसीलिए हमारे प्रारंभिक सत्र में वित्तीय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यनीतियां विकसित करने, ओईसीडी/आईएनएफई सिद्धांतों तथा एशिया और प्रशांत के व्यावहारिक उदाहरणों पर चर्चा शुरू की गई।
- ओईसीडी की मिस फ्लोरे एनी ने अपना प्रारंभिक वक्तव्य दिया। श्री जी.पी.गर्ग, इन्डोनेशिया के श्री पुंग की पुरनोमो, जापान के श्री रियोको ओकाजाकी ने दक्षिण, दक्षिणपूर्व एशियाई और एशियाई देशों के अपने-अपने विचार रखे। डॉ. के.सी.चक्रवर्ती ने इसका विस्तृत वर्णन किया और हेलेना कोलमानोवा ने यूरोपियन परिप्रेक्ष्य के जरिए तस्वीर को संतुलन प्रदान किया।
- *यह स्वतः सिद्ध सत्य है कि जो मापा जाता है वह किया भी जाता है और यह भी सत्य है कि सांख्यिकीय और*

* 5 मार्च 2013 को नई दिल्ली में भारतीय रिज़र्व बैंक की कार्यपालक निदेशक डॉ.दीपाली पंत जोशी द्वारा दिया गया अभिभाषण।

तजुर्बे पैदा हुआ अनुभव ही निश्चित होता है, शेष सब सामान्योक्ति होती है। इसलिए डॉ. ऊर्जित पटेल ने सही ही समर्थपूर्ण ढंग से वित्तीय साक्षरता और क्षमता को मापने हेतु सर्वेक्षण विकसित करने पर सत्र लिया । निदान उपकरण के रूप में सर्वेक्षण, नीति तैयार करने में मदद दे सकते हैं।

- विश्व बैंक की 'सामाजिक सुरक्षा विशेषज्ञ' वेलेरिया पेरोटी ने कम और मध्यम आय वर्गों में वित्तीय क्षमता के मापन पर विचार प्रकट किए तथा एडेले एट्किनसन ने वित्तीय साक्षरता के अंतर्राष्ट्रीय तुलनात्मक मापदंडों के बारे में अपना वक्तव्य दिया तथा ओईसीडी/ आईएनएफई मापन पायलट से प्राप्त साक्ष्यों का जिक्र किया।
- विश्व बैंक के श्री डगलस रेंडर ने फिंडेक्स पर अपना वक्तव्य दिया जिसमें हमारे कई देशों ने भाग लिया।
- तीसरा महत्वपूर्ण सत्र एशिया और प्रशांत क्षेत्र से प्राप्त वित्तीय साक्षरता और वित्तीय समावेशन के संबंध में प्राप्त निष्कर्षों तथा अनुभवों पर था।
- ओईसीडी की फ्लोरे एनी मेसी ने क्षमतापूर्व सत्र को मॉड्रेट किया जिसमें कि जापान के केंद्रीय बैंक के वित्तीय शिक्षा ग्रुप के डायरेक्टर हैड ऑफ प्रोमोशन श्री रियोको ओकाजाकी तथा पापुआ न्यू गिनी की वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी मिस रुफीना पीटर ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियां कीं।
- उन्होंने बताया कि पापुआ न्यू गिनी में टॉक पिसिन तथा हिरिन मोटू - इन दो भाषाओं मे प्रश्न पत्र भरवाना कितना कठिन काम था। उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया कि भारत जैसे देश में 22 राजभाषाओं और 398 जीवित भाषाओं में यह कार्य करवाना कितना कठिन होगा। परंतु यह कार्य तो हमें करना ही है। दिन का अंतिम महत्वपूर्ण सत्र नाइजीरिया के प्रधान सांख्यिकीय अधिकारी राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय के श्री तेमितायो एदेबियी ने लिया।
- आज प्रातः से ही कई महत्वपूर्ण सत्र हुए हैं। रिचर्ड हिन्ज तथा फ्लोरे एनी मेसी ने प्रोग्राम नॉलेज प्रॉडक्ट्स तथा वित्तीय साक्षरता और शिक्षा न्यास निधि की वैबसाइट के बारे में हमें एक मूल्यवान और अंतर्दृष्टि भरी प्रस्तावना प्रदान की।
- इस समय ऐसे कार्यक्रमों के प्रकार पर सीमित साक्ष्य और कम सहमति है जो वित्तीय सामर्थ्य की क्षमता और स्तर बढ़ाने में प्रभावशाली हैं।
- असरदायक प्रभाव मूल्यांकन आवश्यक है मगर अधिकतर इस पर ध्यान नहीं दिया जाता। इस संदर्भ में विश्व बैंक के ट्रस्ट फंड प्रोग्राम मैनेजर, रिचर्ड हिंज द्वारा की गई प्रस्तुति, तथा वित्तीय शिक्षा कार्यक्रमों के मूल्यांकन के लिए ओईसीडी के उच्चस्तरीय सिद्धांत काफी मूल्यवान हैं।
- ओईसीडी के नीति विश्लेषक एडेले एट्किन्सन ने वित्तीय शिक्षा कार्यक्रमों के मूल्यांकन के लिए ओईसीडी के उच्चस्तरीय सिद्धांत प्रस्तुत किए और सिंगापुर की नेशनल यूनीवर्सिटी के श्री जोआन यूंग ने मध्य और कम आय वाले देशों में वित्तीय क्षमता कार्यक्रमों के मूल्यांकन का टूल किट प्रस्तुत किया।
- इसके बाद यूथ डिवेल्पिंग फायनेंशियल स्किल्स एंड कॉम्पीटेंसी विद्यालयों में वित्तीय शिक्षा पर ओईसीडी/ आईएनएफई दिशानिर्देश तथा पीआईएसए वित्तीय साक्षरता पर सत्र लिया गया।
- स्कूलों में वित्तीय शिक्षा अभिनव टूल्ज़, उदाहरण तथा मूल्यांकन निष्कर्षों पर बैंक ऑफ थाइलैंड की मिस एमारा स्त्रिफायाक ने सत्र लिया। विश्व बैंक की कन्सलटेंट मिस लूसियाना ने हमें अमूल्य अन्तर्दृष्टि प्रदान की।
- वित्तीय शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तीकरण पर सत्र, जो कि दिल के बहुत करीब था, उसका मॉड्रेशन सेबी के पूर्णकालिक सदस्य श्री प्रशांत शरण ने किया तथा ओईसीडी की परामर्शदाता मिस चियारा तथा यूएनडब्ल्यूओएमईएन की मिस सुषमा कपूर द्वारा की गई प्रस्तुतियों के जरिए काफी मूल्यवान अनुभवों का आदान-प्रदान हुआ।
- वित्तीय क्षमता वृद्धि के लिए नवोन्मेषी विधियों पर एक सत्र हुआ जिसमें भारत में ''डोरस्टेप-बैंकिंग'' तथा वित्तीय शिक्षा पर विश्व बैंक के श्री लियोपोल्ड

सार द्वारा प्रस्तुति की गई। यह सत्र भी काफी उपयोगी रहा। कॉमिक बुक्स पर जॉर्ज टाउन विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर प्रो.बिली जैक द्वारा की गई प्रस्तुति का भी हम सबने काफी आनंद लिया।

- दक्षिण अफ्रीका में कर्ज़ प्रबंधन में सुधार लाने के लिए सीरियल मेलोड्रामा के लिए हम विश्व बैंक की फ्लोरेन्टिना मुलाज तथा नाइजीरिया में लॉटरियों तथा बचतों पर अनुभवों के आदान-प्रदान के लिए विश्व बैंक के 'इकोनोमिक डिवलपमेन्ट रिसर्च ग्रुर्प' के श्री मार्टिन कान्ज़ का आभार प्रकट करते हैं ।
- वित्तीय जागरूकता को बढ़ाने के लिए जो नई विधियां और टूल्ज़ विकसित किए गए हैं उनसे हमें परिचित करवाने के लिए हम सभी वक्ताओं के आभारी हैं; समर्थता साक्ष्य हमें बताता है कि ये अभिनव विधियां, उस लक्ष्य वर्ग पर, काफी सकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं जो एक परिसंपत्ति रहित गरीब है और जिस तक हम भौगोलिक तथा कम साक्षरता स्तरों के कारण नहीं पहुंच पाते। संक्षेप में, भिन्न देशों के अनुभव जो हमारे सामने आए हैं, उनसे हमने बहुत सीखा है।
- आपमें से कुछ लोगों ने हमारे स्टॉल्ज़ को भी देखा होगा और उनमें से कुछ कॉमिक्स बुक्स भी, वापस अपने साथ ले जाने के लिए ली होंगी।
- हालांकि हमने काफी रास्ता तय किया है, मगर राह अभी भी बाकी है। वित्तीय साक्षरता के माध्यम से, वित्तीय क्षमता का निर्माण, वित्तीय समावेशन प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। इस बात पर हम सभी सहमत हैं कि अपने-अपने देश के साक्षरता स्तरों, प्रति व्यक्ति आय, अर्थव्यवस्था के वित्तीयकरण के स्तरों के आधार पर, वित्तीय समावेशन और साक्षरता के लिए, प्रत्येक देश को अपनी राह स्वयं बनानी है।
- इस बात पर तो हम सर्वसम्मत हैं कि वित्तीय साक्षरता तथा ऐसी राष्ट्रीय कार्यनीतियों की आवश्यकता है जिसमें सभी जोखिमधारक शामिल हों, यथा - केंद्रीय तथा राज्य सरकारें, वित्तीय विनियामक, सिविल सोसायटी, पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप्स, इत्यादि।
- हम इस बात से सहमत हैं कि वित्तीय साक्षरता तथा वित्तीय शिक्षा से उपभोक्ता की सुरक्षा होती है और इसी से वित्तीय स्थायित्व आता है।
- आप भारत में अर्थात् 'रहस्यमय पूर्व' में पधारे हैं। इसलिए मैं आपको एक मंत्र देता हूं। हमारा सामूहिक वैश्विक लक्ष्य है 'अधिक वृद्धि जो देगी समावेशित और टिकाऊ विकास'। हमारे वित्तमंत्री इसे ही विकास का मूल मंत्र मानते हैं।
- आर्थिक वृद्धि जरूरी है परंतु यह समानता के साथ होनी अनिवार्य है।
- देवियो और सज्जनो! हमें बेझिझक, वित्तीय क्षमता निर्माण की जरूरत को स्वीकार करना चाहिए जो कि हमें ''वृद्धि के उच्चतम लक्ष्य'' की ओर ले जाय। वृद्धि और विकास ही हमें समावेशित विकास की ओर ले जाएंगे; बिना वृद्धि के न विकास होगा न समावेशन आएगा।
- भारतीय बजट पेश करते हुए वित्तमंत्री महोदय ने स्टिगलिज़ की उक्ति उद्धरित करते हुए कहा था कि, ''हालांकि समानता के लिए एक नैतिक आधार है, मगर यह भी जरूरी है कि टिकाऊ वृद्धि हो। किसी भी देश का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन उसके लोग होते हैं'' आप सब सहमत होंगे कि यहां लोगों से तात्पर्य वित्तीय रूप से साक्षर, वित्तीय रूप से शिक्षित और वित्तीय रूप से समावेशित लोगों से है।
- और अंत में, इसमें तो कोई संदेह ही नहीं है कि यह एक 'महान सम्मेलन' सिद्ध हुआ है। हमने काफी राह तय की है, मगर कई चुनौतियां बाकी हैं और अभी भी मंज़िल दूर है।
- हमारे प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू, रॉबर्ट फ्रॉस्ट की ये पंक्तियां बार-बार दोहराते थे

  'गहन श्याम वन मुझे लुभाते
  पर मुझको रखने हैं वादे
  मीलों दूर अभी है जाना
  सोने से पहले'

- जैसा कि डॉ.सुब्बाराव ने वर्णन भी किया है, 'केंद्रीय बैंकों के अधिदेश का एक भाग, वास्तव में एक महत्वपूर्ण भाग है वित्तीय स्थिरता, और वित्तीय स्थिरता की एक अनिवार्य पूर्वापेक्षा है वित्तीय साक्षरता और वित्तीय साक्षरता प्रदान करने का अनन्य लीवरेज, केंद्रीय बैंक के पास है।'

- हमारे लोगों में वित्तीय क्षमता का निर्माण करने की जरूरत पर हम सभी सहमत हैं। हमें लोगों का सशक्तीकरण करना है। अब समय आ गया है कि हम यह कार्य करें और सब साथ मिल जाएं तो हम यह कर सकते हैं, इसे हम जानते हैं।